बच्चों के साथ मेरे अनुभव

बासुदेव भट्ट

मेरे कक्षा में कुछ अनुभव एक यात्रा की तरह हैं। मैं हमेशा की तरह कक्षा में जाते ही कुछ माहौल बनाने की कोशिश करता हूँ। इसके लिए मैं कुछ गतिविधियों व कविता को लेकर नए पाठ को आगे शुरू करता हूँ। कुछ बच्चे पाठ से सम्बन्धित प्रश्न पूछते हैं तथा कुछ बच्चे अलग प्रश्न करते हैं। मेरे कक्षा में जाते ही बच्चे अपने को ख़ुश व स्वतंत्र महसूस करते हैं। कुछ बच्चे शोर मचाते हुए 'भट्ट सर आ गए, भट्ट सर आ गए' कहते हैं। बच्चों के बीच मुझे बहुत कुछ सुनने व समझने को मिला। कक्षा में मुझे बच्चों की नई उमंग व शक्ति को एक दिशा देकर मन प्रसन्न हो जाता है। हर बच्चा अपनी गति से सीखता है।

कुछ बच्चों को समझ बनाने में समय अधिक लगता है। कक्षा में सभी बच्चे अलग-अलग विचार रखने वाले मिले हैं जो कि काफ़ी समय तक कहानी व कविता की गतिविधियों को कराकर एक मत पर कार्य कर पाते हैं। बच्चों के साथ कुछ मॉडल बनाकर, कक्षा में उसे छूकर व देखकर अपनी समझ बनाने की कोशिश करते हैं। इन गतिविधियों से बच्चे तेज़ी से सीख पाते हैं। किताब के अलावा की गई गतिविधियों में बच्चे अधिक रुचि लेते हैं। पढ़ाए गए पाठ में से लिए नाटक को खेलने में बच्चों के साथ अच्छा लगता है। या फिर इससे सम्बन्धित कविता को समूह में गतिविधियों के साथ करवाने पर अच्छा लगता है। बच्चों के द्वारा बनाए गए चित्र व लिखे शब्दों को देखने व पढ़ने में एक अलग अनुभूति महसूस होती है। सभी बच्चों में कुछ-न-कुछ प्रतिभा रहती है। पाठ्यपुस्तक से हटकर कक्षा में जो भी किया जाता है उसमें बच्चे अधिक रुचि से कार्य करते हैं। वे आसानी से समझ बनाने की कोशिश करते हैं। चुने पाठ को नाटक के रूप में आसान से आसान तरीके से प्रस्तुत करने का प्रयास करते हैं।

पाठ योजना में प्रत्येक बच्चे को मद्देनजर रखते हुए उनके अनुसार कक्षा में बच्चों को जानकारी देने का प्रयास रहता है। हर बच्चा अपनी गति से कुछ-न-कुछ सीखता है। इस विचार से कक्षा का शिक्षण कार्य किया जाता है। पाठ को पढ़ाने से पहले कक्षा में कुछ ताज़गी व उमंग लाने के लिए कार्य किया जाता है। इससे बच्चे नई सूचना को पढ़ने में आसानी महसूस करते हैं। दिए गए पाठ को विभिन्न उदाहरणों व चित्रों से पढ़ाने पर बच्चों को सीखने में काफ़ी मदद मिलती है। बच्चे स्वयं भी कुछ नया करने में लगे रहते हैं। पढ़ाने के अलावा भी बच्चे खेलकूद, नाच-गाने में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते हैं। बच्चों को स्कूल आने में अच्छा लगता है। अच्छा लिखना, काग़ज से चीज़ें बनाना व मिट्टी के खिलौने बनाने में अच्छा महसूस करते हैं। इतना ही नहीं बल्कि हाथ से बनाई गई वस्तुओं पर रंग लगाने में अच्छा महसूस करते हैं। अध्यापक से नई कहानियाँ सुनने को बार-बार कहते हैं जो कि बहुत बच्चों के साथ बहुत अच्छा लगता है। बच्चों को उनकी क्षमता के अनुसार ज्ञान देना चाहिए ताकि उस ज्ञान को बच्चे ठीक से समझ पाएँ। समूह में बैठकर बच्चों का चार्ट व ए-4 कागज पर चित्रों को बनाने व उन पर रंगों को सही से लगाने के लिए उत्सुकता दिखाना एक नई स्फूर्ति को दर्शाता है। किताबों से परे बच्चों से जो सीखने का जज़्बा मुझे अपने इस स्कूल में मिला वह किसी अन्य स्कूल में नहीं मिला। एक कक्षा में विभिन्न प्रकार के बच्चे होते हैं जो कि पढ़ने व लिखने की गतिविधियों को कला का एक रूप मानते हैं। सीखने में सक्षम बनाने के लिए कक्षा में उपयोग की जाने वाली विधि सरल होनी चाहिए। बच्चे अपनी भाषा को आधार मानते हुए अन्य भाषा व विषयों को सीखने में रुचि लेते हैं। बच्चे अपनी गति से सीखने में अच्छा महसूस करते हैं। बच्चे किसी विषय पर अपनी समझ बनाने की कोशिश करते हैं। जब भी कोई नई कविता पढ़ना हो तो कविता को टुकड़ों व पंक्तियों को अलग-अलग करके फिर उसे मिलाने का प्रयास करते हैं। इस प्रकार बच्चे कविता को मन में देर तक रखते हैं। संगीत की कक्षा में बच्चों के साथ कार्य करने में बहुत अच्छा लगा। कुछ गीत जैसे

• साँभर झील से भराया भैंरु मारवाड़ी ने, बंजारा नमक लाया ऊँटगाड़ी में • इसलिए राह संघर्ष की हम चुनें
जिंदगी आंसुओं से नहाई न हो • गीत गा रहे हैं आज हम • हम होंगे कामयाब

इन गीतों को ढोलक व हारमोनियम के साथ गाया गया। ये गीत एक कक्षा में ही नहीं बल्कि पूरे स्कूल में गूँजे हैं। इसी के साथ स्कूल में संगीत को एक महत्त्वपूर्ण स्थान मिला है। टीएलएम बनाने का अनुभव प्राप्त हुआ। इससे बच्चों व स्कूल में रोचकता व रुचि आगे बढ़ती हुई मिली।

बासुदेव भट्ट उत्तरकाशी के अज़ीम प्रेमजी स्कूल में 2012 से कार्यरत हैं। उनके द्वारा पढ़ाए जाने वाले मुख्य विषय सामाजिक विज्ञान और अँग्रेज़ी हैं। उन्होंने हिन्दी, अँग्रेज़ी और पर्यावरण विज्ञान भी पढ़ाया है। उन्हें स्कूल पुस्तकालय के प्रबन्धन का अतिरिक्त अनुभव है। उनसे basudev.bhatt@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।